ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

संयुक्तांक
वर्ष-49 • अंक 3-4

अक्टूबर-मार्च 2017

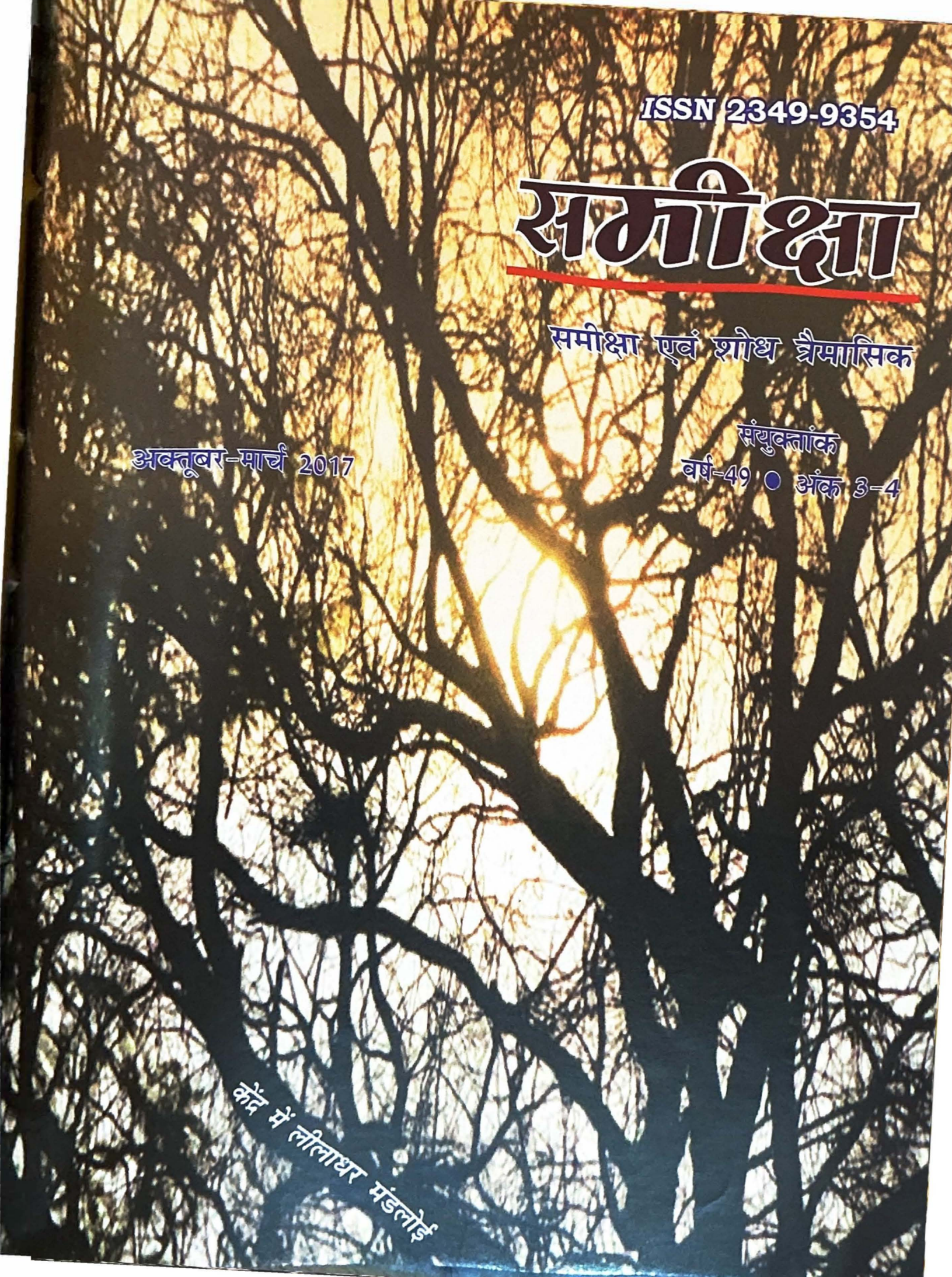

केंद्र में लीलाधर मंडलोई

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

अक्टूबर-मार्च, 2017

वर्ष 49, अंक 3-4

संस्थापक सम्पादक

गोपाल राय

सम्पादक

सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक

अमिताभ राय

प्रबन्धन

सीमा

समीक्षा

ISSN : 2349-9354

अक्टूबर-मार्च, 2017

वर्ष: 49, अंक : 3-4

प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2017

मूल्य :

एक प्रति: *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

सम्पर्क:

समीक्षा

द्वारा *अमिताभ राय*

803, अ , शिप्रा सृष्टि अहिंसा खंड-1,

इंदिरापुरम-201014, उ.प्र.

मोबाइल : 09582502101

ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन: कृपया सारे भुगतान केवल बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या: 2257002100011106, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, इग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजिए। बैंक ड्राफ्ट 'समीक्षा' को नई दिल्ली में देय होगा। ड्राफ्ट उपरोक्त पते पर भेजें।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायाधिकरण, दिल्ली होगा

आवरण चित्र: लीलाधर मंडलोई

अनुक्रम

		पृ.सं.
संपादकीय		3
विशेष प्रस्तुति		
केंद्रस्थ		
मेरी रचना प्रक्रिया के सूत्र	लीलाधर मंडलोई	6
भाषा में मनुष्य रचता कवि	धनंजय वर्मा	7
भीजै दास कबीर	निशांत	41
हरदयाल स्मरण		
तेजी से भभककर बुझी लौ		45
साक्षात्कार		
रचना ही मूल्यांकन का निकष होना चाहिए	छबिल कुमार मेहेर	48
कविता		
संवेदना का अप्रतिम विन्यास	सर्वेश सिंह	55
शमीम, उज्जैन और गृहस्थी का नमक	रत्नेश विश्वसेन	60
उपन्यास		
पहाड़: प्रतीक ही नहीं, साक्षात् भी	सुवास कुमार	64
उदार होते भारत के जेहन का अंडरवर्ल्ड: जानकीदास तेजपाल मैंशन	उपेन्द्र यादव	67
अकाल में उत्सव	विजय बहादुर सिंह	72
नक्काशीदार कैबिनेट : एक सराहनीय प्रयास	विजय शर्मा	75
कहानी		
दलदल	हरेकृष्ण तिवारी	77
दलित विमर्श		
भारतीय दलित साहित्य के पैरोकार	अरुण होता	79
आलोचना		
साहित्यिक समाजशास्त्र पर पुनर्विमर्श	कुमार वरुण	85
आलोचना का नीलकुसुम	सुलोचना दास	88
अलंकारों पर आधुनिक दृष्टि	रमेश कुमार वर्णवाल	93
आलोचना में कैनन निर्माण प्रक्रिया की सजग पड़ताल	पम्मी राय	96
संस्मरण		
अजित कुमार संस्मरण	सत्य प्रकाश सिंह	100
यात्र संस्मरण		
बेमकसद यात्राओं की अनूठी दास्तान	रेखा उप्रेती	102
चल खुसरो घर आपने	पूनम सिन्हा	105

संपादकीय

पुस्तकें जो पढ़ीं

(1) बिहार की संगीत परम्परा (गजेंद्र नारायण सिंह, तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी, ए-22, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-48)

बिहार की फिजा में संगीत की फगुनाहट भी है, कम लोगों को ये मालूम है; मालूम है तो बिहार की बदनामी; जंगल राज; अपराध; अपराधी राजनीतिज्ञ। हालाँकि अब यह बिहार ही सब जगह है। दिल्ली भी महफूज नहीं। अभी हम एक मित्र के घर जा रहे थे। उनकी शादी का 25वाँ साल लगा था; गाड़ी से उतरकर एक गुलदस्ता लेना था, पत्नी को भी उतरना था, क्योंकि पसंद तो उन्हीं की होती है। मोहतरमा ने लंबे-लंबे झुमके पहन रखे थे। मैं डर गया। उन्हें साड़ी से कान ढँकने की सलाह दी; सलाह मान ली गई, क्योंकि डर हम दोनों के भीतर था। तो इस मामले में दिल्ली भी अलग नहीं। बस बिहार बदनाम है। ये लीजिए! मैं तो बिहार को डिफेंड करने बैठ गया। चलिए, एक किताब से परिचित कराता हूँ जो बिहार की सृजनात्मकता को उद्घाटित करती है। किताब का नाम है 'बिहार की संगीत परम्परा', जिसके सर्जक हैं प्रसिद्ध संगीतकार, संगीत-उद्यमी, बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष पद्मश्री से अलंकृत, बिहार अकादमी पुरस्कार से नवाज़े 'बिहार रत्न' श्री गजेन्द्रनारायण सिंह। स्वयं प्रसिद्ध संगीतज्ञ होने के साथ-साथ अपने शागिर्दों को भी इस काबिल बनाया कि उन्होंने भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। श्री सिंह ने "ध्रुपद के सबसे पुराने विलुप्तप्राय बेतिया घराना को विस्मृति के गर्भ से निकाला। उनके शोध प्रबंध का शीर्षक चौकाने वाला है "मुस्लिम शासकों का रागरंग और फनकार शहंशाह औरंगजेब"। कहते हैं औरंगजेब कट्टर मुसलमान था और इस्लाम का पक्का अनुयायी होने के कारण दरबार में मौसिकी पर पाबंदी लगाई थी। इस नाते इनके शोध प्रबंध को पढ़ना दिलचस्प होगा।

सद्य प्रकाशित कृति 'बिहार की संगीत परम्परा' में पंडित रामचतुर मल्लिक, सियाराम तिवारी, महाराजा राजेंद्र किशोर, महाराज नवल किशोर, पंडित जयकरन मिश्र, रोशनआरा बेगम, उस्ताद अब्दुल करीम, अखौरी नागेन्द्र नारायण सिंह, विन्ध्यवासिनी देवी, शारदा सिंह, मोहम्मद बांदी, जोहरा बाई, ठेला बाई, बृजबाला देवी, मुराद बानो आदि सैकड़ों संगीतज्ञों के योगदान और विशिष्टता को इस पुस्तक में याद किया गया है। इसके अलावा संगीत की बारीकियों पर भी गजेन्द्रनारायण सिंह ने अपनी कलम चलाई है। बिहार की संगीत समृद्धि को जानने समझने के लिए यह किताब जरूरी है; इस दर्द के साथ जिसका जिक्र अंत में हुआ है इस प्रश्न के साथ कि "क्या बिहार संगीतकला का मरुस्थल बनता जा रहा है?" पर जब तक संजीव जी जैसे उद्यमी हैं बिहार मरुस्थल नहीं बन सकता। श्री संजीव सिंह जो 'तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी' के कहने को तो सचिव हैं, पर पीर, बावर्ची, भिश्ती सब कुछ हैं, बिहार को पुनः सांस्कृतिक केंद्र बनाने में उद्धत हैं। 'तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी' खासकर श्री संजीव सिंह को इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए साधुवाद और बधाई। श्री संजीव सिंह बिहार स्थित कुख्यात सीवान के समीप 'नरेन्द्रपुर' जैसे गाँव में एक सांस्कृतिक केंद्र बना चुके हैं जहाँ देश-विदेश के प्रख्यात लेखक, संगीतज्ञ और अन्य कलाकार विराजमान होते हैं और पधारते रहते हैं। इसके अलावा 'नरेन्द्रपुर' एक कौशल विकास केंद्र के रूप में विकसित हो चुका है जहाँ हजारों किसानों, मजदूरों और खासकर ग्रामीण महिलाओं को कुशल बनाकर रोजगार दिया जा चुका है। 'नरेन्द्रपुर' का यह प्रकाश बिहार में फैल रहा है और फिर से बिहार एक सांस्कृतिक केंद्र बनने की दिशा में आगाज कर चुका है।

(2) पाकिस्तान का मतलब क्या (असग़र वजाहत, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003)

यह यात्र वृत्तांत है-

असग़र वजाहत अपनी पाकिस्तान यात्रा को इसमें दर्ज किया है। असगर ने वहाँ के जीवन को बहुत असगर गौर से देखा है और जमीनी हकीकत जानने का प्रयास किया है। इस पूरे वृत्तांत में यह साफ है कि पाकिस्तान का लोकतंत्र बहुत दबा है। राजनीति सहित जीवन के हर हिस्से में धर्म का दबदबा है जिससे वहाँ के परिवेश में घुटन है और आशंका और संदेह का माहौल

है। उदारवादी लोकतांत्रिक और तरक्की पसंद लोगों के आवाज में एक कम्पन है, डर है, हकलाहट है, वहाँ धार्मिक सहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं है। सेना और धर्म सर्वोपरि है जो इनकी खिलाफत करता है उसकी खैर नहीं। जो समृद्ध हैं, उनके पास सारी सहुलियतें हैं। जो गरीब है उनपर सारी पाबंदियाँ हैं। इस वृत्तांत में लेखकों का एक तरक्कीपसंद समुदाय भी है, पर वे भी सहमे-सहमे नजर आते हैं और वे दुआ करते हैं कि असगर जैसा तरक्की पसंद इंसान सही सलामत भारत लौट जाए। किस्से दिलचस्प हैं जिससे पाकिस्तान को रूबरू देखने में मदद मिलती है।

(3) ये पुराने पत्र (संकलन-भारत भारद्वाज, प्रकाशक किताब वाले/ 22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग, अंधेरी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002)

भारत भारद्वाज उद्यमी, सजग और अनवरत कार्यरत साहित्यकर्मी हैं। उनकी साहित्यिक आकुलता और साहित्य को कुछ नया देने का जज्बा काबिले तारीफ है। 'ये पुराने पत्र' उनके श्रम का प्रतिफलन हैं जिसमें उन्होंने 33 साहित्यकारों के पत्र संकलित किए हैं। फोन करके उन्होंने मुझे सूचित किया, किताब भेजी। इसमें बाबूजी (गोपाल राय) के भी पत्र हैं। पत्र साहित्यकार को जानने का एक कारगर उपकरण है और इस लिहाज से यह पुस्तक शोधकर्त्ताओं के लिए खासतौर पर उपयोगी होगी।

(4) पकी जेठ का गुलमोहर (भगवान दास मोरवाल, प्र. वाणी प्रकाशन-4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली -110002)

'स्मृति-कथा' के रूप में प्रकाशित यह पुस्तक दिलचस्प है, बकौल फ्लैप 'बेनाम और गुमनाम पात्रों की अनकही कथा' है। जिन लोगों ने मोरवाल जी के उपन्यासों को पढ़ा है उन्हें इसमें कई पात्र 'जीवित' रूप में मिल जाएँगे। यह एक तरह से मोरवाल जी की अपनी असंपादित 'कथा' है, इसलिए इसे 'स्मृति-कथा' कहा है मोरवाल जी ने।

(5) ड्योढ़ी और उसके बाहर (आनंदवर्धन/ यश पब्लिकेशन, 1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32)

आनंदवर्धन का नया काव्य-संग्रह। 'ड्योढ़ी' के अंतर्गत अपने आस-पास का संसार जिसमें बसंत भी है, पिता भी, तकिया भी है, अलबम भी, आम का पेड़ भी है, बगुला भी 'और उसके बाहर' में सोफिया (वल्गारिया की राजधानी) भी है, वहाँ के लोग, सिकंदर, वेनिस, बुदापेश्त, शिपका से उनका साक्षात्कार भी। कविता में भावुकता, संवेदना और दुनिया का सच जिसमें हिंसा के बीच अहिंसा और शांति की खोज। अपना गाँव भी है, शहर भी, आत्मीय भी है और सात समुंदर पार का अनुभव भी है जो कविता में ढला है और मन को बाँधता है। यह काव्य- संग्रह आनंदवर्धन की सर्जन क्षमता का अद्भुत प्रतिमान है।

(6) प्रपद्यवाद और नलिन विलोचन शर्मा (निरंजन सहाय/ युगांतर प्रकाशन, डी-1209, गली नं.-4, अशोक नगर, दिल्ली-93) नलिन विलोचन शर्मा की जन्म शताब्दी के अवसर पर यह एक जरूरी किताब है। इसमें नलिन विलोचन शर्मा की प्रयोगधर्मिता, नया कहने और करने का साहस, साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में पदार्पण और नई डगर की खोज, शोध और साहित्य दर्शन जैसे विषयों पर नई जमीन- इनके लिए याद किए जाते रहेंगे नलिन विलोचन शर्मा। नलिन विलोचन शर्मा को जानने, पहचानने और फिर से उन्हें साहित्य जगत में चर्चा का विषय बनाने में इस पुस्तक का विशेष महत्त्व है। नलिन जी पर काम करने के लिए शोधार्थियों को यह अनुपम सौगात है।

श्रद्धांजलि

'समीक्षा' के आरंभिक दिनों से जुड़े डॉ वीरेन्द्र सक्सेना नहीं रहे। वे बराबर मुझे फोन करते थे; क्या कुछ नया आया है; समीक्षा के लिए कौन-कौन सी पुस्तकें आई हैं; जो पुस्तकें नहीं आ पाईं उन्हें मँगाकर समीक्षार्थ उन्हें भेजने का अनुरोध- यही हमारी बातचीत का विषय होता था। पिछले दिनों यानी 13 जुलाई 2016 को साहित्य अकादमी पर जब बाबूजी (गोपाल राय) की स्मृति में एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी उसमें उन्होंने गोपाल राय और उनसे अपने आत्मीय संबंधों की विस्तृत चर्चा की थी। उसके तुरंत बाद उनका फोन आना बंद हो गया और एक दिन यह बुरी खबर आई।

वीरेन्द्र सक्सेना, केंद्रीय हिंदी निदेशालय से उपनिदेशक के रूप में कार्यरत रहे और उन्होंने वहाँ कई योजनाओं को मूर्त रूप देने में सक्रिय भूमिका अपनाई। उन्होंने कई उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, लेख, संस्मरण लिखे। उनके ज्यादातर उपन्यास और कहानियाँ स्त्री-पुरूष के मुक्त काम संबंधों पर आधारित होते थे और वे उन पक्षों पर भी लिखने में नहीं हिचकते थे जिन्हें हिंदी साहित्य में वर्जित माना जाता था।

वीरेन्द्र सक्सेना को समीक्षा परिवार की ओर से नमन और श्रद्धांजलि। उनके जाने से समीक्षा परिवार का एक कोना सूना हो गया।

यह संयुक्तांक है। समीक्षा ने 49 वर्ष पूरे कर लिए हैं। अगले अंक से अर्धशताब्दी शुरू होगी।